Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

उपसर्ग एवं प्रत्यय

LIVE 03:00 PM

रोको मत जाने दो।

रामलाल सिंह तो, मर गये।

विराम-चिह्न -

व्याकरण में 'विराम-चिह्न' का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन चिह्नों के द्वारा वाक्यों को पढ़ने, बोलने और उनके अर्थ को समझने में बहुत सहायता मिलती है।

अर्थ और परिभाषा-

विराम-चिह्न वस्तुतः अर्थ-निर्देशक होते हैं और उन्हें सदैव इसी दृष्टिकोण द्वारा व्यवस्थापित किया जाना चाहिए। वक्ता को बोलते समय किसी पद, वाक्यांश अथवा वाक्य के पश्चात् आशय की स्पष्टता के लिए रुकना पड़ता है।
इस रुकने की क्रिया को ही 'विराम' की संज्ञा दी गयी है।
विराम-शब्द से रुकने का भाव ग्रहण किया जाता है।

विराम-चिह्न वाक्य में निम्न कार्य करते हैं, जो नीचे दिये गये हैं :
(1) वाक्य में स्पष्टता लाने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग अनिवार्य होता है। यदि वाक्य में इन विराम-चिह्नों का प्रयोग ठीक न हो तो अस्पष्टता और भ्रामकता बनी रहती है।

(i) रोको मत जाने दो। (अस्पष्ट वाक्य)
(ii) रोको मत, जाने दो। (स्पष्ट वाक्य)
(iii) रोको, मत जाने दो। (स्पष्ट वाक्य)

(2) कभी-कभी विराम चिह्न के समुचित प्रयोग के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

(i) मलखानसिंह तो, मर गये।
(ii) मलखानसिंह तोमर गये।

विराम-चिह्न -

हिन्दी में प्रयुक्त विराम चिह्न			
1.	अल्प विराम	,	(Comma)
2.	अर्द्धविराम	;	(Semi colon)
3.	पूर्ण विराम	।	(Full stop)
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	?	(Sign of Interrogation)
5.	विस्मयादिबोधक	!	(Sign of Exclamation)
6.	योजक चिह्न	-	(Hyphen)
7.	निर्देशक चिह्न	–	(Dash)
8.	विवरण चिह्न	:–	(Colon Dash)
9.	उद्धरण चिह्न	‘ ’ “ ”	(Inverted Commas)
10.	कोष्ठक चिह्न	() { } [ ]	(Brackets)
11.	संक्षेप चिह्न	.	(Dot)
12.	हंस पद चिह्न	ऽ	—
13.	लोप सूचक चिह्न	× × ×	(Cross)
14.	पुनरुक्ति सूचक चिह्न	” ”	(As on)
15.	तारक चिह्न	*	(Star)

1. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)मुम्बई कोलकाता,दिल्ली और चेन्नई भारत की बड़ी जनसंख्या वाले नगर हैं।

(B)मुम्बई ! कोलकाता दिल्ली और चेन्नई भारत की बड़ी जनसंख्या वाले नगर हैं।

(C)मुम्बई ? कोलकाता, दिल्ली और चेन्नई भारत की बड़ी जनसंख्या वाले नगर हैं।

(D)मुम्बई,कोलकाता,दिल्ली और चेन्नई भारत की बड़ी जनसंख्या वाले नगर हैं।

1.अल्प विराम (,)

वाक्य को पढ़ते समय जहाँ थोड़ी देर के लिए रुकते या ठहरते हैं वहाँ अल्प विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी भाषा में इस विराम चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है :-

(1) एक ही वाक्य में जब एक से अधिक उपवाक्य, शब्द और वाक्यांश समानरूप में प्रयुक्त होते हैं, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(i) मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली और चेन्नै भारत की बड़ी जन-संख्यावाले नगर हैं।
(ii) सागर में सीप, मोती, हीरे होते हैं साथ ही मछलियाँ, मगर और कीड़े भी होते हैं।

(2) किसी उद्धरण, उक्ति, या कथन से पूर्व अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है।

(i) महात्मा गाँधी ने कहा था, "शान्तिपूर्ण आन्दोलन से ही भारत को स्वतन्त्र कराया जा सकता है।"

(3) किसी विषय और उसके सम्बन्ध में जानकारी देने या स्पष्ट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
उदाहरण के लिए,

(i) रामचन्द्रिका, अयोध्यापुरी वर्णन खण्ड, छन्द-संख्या 3
(ii) कामायनी, श्रद्धा सर्ग, पृ० 33

(4) 'और' से जुड़े हुए शब्दों को अलग करने के लिए अल्प विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

भारत में ग़रीब और अमीर,सवर्ण और असवर्ण आदि अनेक समस्याएँ हैं।

(5)तिथि या तारीख़ को उनके ई० संवत् से अलग करने के लिए
(i) 15 अगस्त, 1947 (ii) 26 जनवरी, 1949

2. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक अनुशासनहीनता है; डाकुओं का आतंक है; गुण्डागर्दी है और अशान्ति का वातावरण है।

(B)उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक अनुशासनहीनता है, डाकुओं का आतंक है, गुण्डागर्दी है और अशान्ति का वातावरण है।

(C)उत्तरप्रदेश में ! सर्वाधिक अनुशासनहीनता है; डाकुओं का आतंक है; गुण्डागर्दी है और अशान्ति का वातावरण है।

(D)उत्तरप्रदेश ! में सर्वाधिक अनुशासनहीनता है। डाकुओं का आतंक है- गुण्डागर्दी है, और अशान्ति का वातावरण है

2.अर्द्ध विराम [;]

(1) वाक्य में जिस स्थान पर अल्प विराम से अधिक देर रुकने या ठहरने का संकेत मिले वहाँ अर्द्धविराम का चिह्न प्रयोग किया जाता है।

उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक अनुशासनहीनता है; डाकुओं का आतंक है; गुण्डागर्दी है और अशान्ति का वातावरण है।

(2) एक ही अर्थ में दो या अधिक वाक्यों के बीच इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
वह परिश्रमी है; वह परिश्रम से कभी नहीं घबराता है।

(3) उपाधियों के बीच अर्द्ध विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
(ii) एम० ए०; पी-एच० डी०; एल-एल० बी०; एल-एल० एम०;

3. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)श्याम, पुस्तक पढ़ता है।

(B)श्याम #पुस्तक पढ़ता है।

(C)श्याम पुस्तक पढ़ता है

(D)श्याम पुस्तक पढ़ता है।

3.पूर्ण विराम (।) - यह वाक्य की समाप्ति का बोधक है अर्थात् पूर्ण विराम वाक्य में पूरी तरह ठहराव और वाक्य के सम्पूर्ण अर्थ का बोधक भी है। अधोलिखित स्थितियों में इसका प्रयोग होता है -

(i) वाक्य के अन्त में - श्याम पुस्तक पढ़ता है। सैनिक युद्ध में वीरतापूर्वक लड़े।

(ii) कहानी-उपन्यास लिखने में- वह डाकू। कितना भयानक था उसका चेहरा।

(iii) छन्द के चरणों की समाप्ति पर- रहेउ एक दिन अवधि अधारा, समुझत मन दुख भएउ अपारा।

4. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)क्या! तुम भी क्रिकेट मैच खेलने जा रहे हो।

(B)क्या तुम भी क्रिकेट और मैच खेलने जा रहे हो ?

(C)क्या तुम भी क्रिकेट मैच खेलने जा रहे हो ?

(D)क्या ! तुम भी क्रिकेट मैच खेलने जा रहे हो ?

4.प्रश्नवाचक चिह्न [?]

किसी से प्रश्न करने अथवा सन्देहात्मक स्थितियों में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है :-

(1) जिन वाक्यों में किसी से प्रश्न किया जाता है, उनके अन्त में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

आप क्यों रोते हैं?
आपका बेटा कहाँ है ?

(2)अनिश्चयात्मक और सन्देहात्मक स्थितियोंवाले वाक्यों में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

शायद वह विदेशी है ?
वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सका ?

5. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)अरे! बस खाई में गिर गई -

(B)अरे! बस खाई में गिर गई

(C)अरे । बस खाई में गिर गई

(D) (अरे) बस खाई में गिर गई

5.विस्मयादि बोधक चिह्न (आश्चर्य चिह्न) (!)

हर्ष, शोक, प्रसन्नता, उत्साह, आश्चर्य, घृणा आदि भावों की अभिव्यक्ति करने वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक अव्ययों के बाद यह चिह्न लगता है। श्री गुरु ने इसे आश्चर्य चिह्न कहा है।

आह! वह बेचारा चल बसा-शोक

अरे ! बस खाई में गिर गई - दुर्घटना

6. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)पिता पुत्र, साधु ब्राह्मण, रात दिन

(B)पिता/पुत्र, साधु/ब्राह्मण, रात/दिन

(C)पिता-पुत्र, साधु-ब्राह्मण, रात-दिन

(D)पिता ! पुत्र, साधु-ब्राह्मण, रात,दिन

6.योजक चिह्न [-]

योजक चिह्न को समासबोधक अथवा विभाजक चिह्न भी कहते हैं।

द्वन्द्व समास में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

पुनरुक्त शब्दों के बीच में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

लिखते समय यदि कोई शब्द पंक्ति में पूर्ण न हो सके तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(i) चरण-कमल, राज-शचि आदि
(ii) पिता-पुत्र, साधु-ब्राह्मण, रात-दिन आदि
(i) राम-राम, हरे-हरे, हाँ-हाँ, घर-घर आदि

7. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)संसद् के दो सदन हैं ? राज्यसभा और लोकसभा,

(B)संसद् के दो सदन हैं- राज्यसभा , लोकसभा।

(C)संसद् के दो सदन हैं- “राज्यसभा” “लोकसभा”।

(D)संसद् के दो सदन हैं- राज्यसभा और लोकसभा।

7.निर्देशक चिह्न (-)

यह विराम-चिह्न योजक चिह्न से बड़ा होता है-

1.किसी विषय अथवा विभाग को स्पष्ट करने तथा उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए-
संसद् के दो सदन हैं- राज्यसभा और लोकसभा।

2.कोई विवरण या स्पष्टीकरण देने के लिए-
भारत इसलिए धर्म-निरपेक्ष है क्योंकि यहाँ विभिन्न धर्मों को अपनाने की स्वतन्त्रता है।

3. अनेक वस्तुओं और व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्दों को पृथक् करने के लिए-

बालक, युवक, वृद्ध, स्त्री-सभी ने होली का आनन्द लिया।

8. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A)संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं - उत्तम, मध्यम और अन्य।

(B)संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं @उत्तम, मध्यम और अन्य।

(C)संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं,, उत्तम, मध्यम और अन्य।

(D)संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं:- उत्तम, मध्यम और अन्य।

8.विवरण चिह्न (:-)

किसी विषय या वस्तु का विवरण देने तथा किसी कथन की व्याख्या करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(1) किसी विषय का विस्तार से विवरण देने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित का परिचय दीजिए :- आर्यभट, कोलम्बिया
निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए :- भूमा, त्रिपिटक, अद्वैत

(2) किसी कथन का विशेष विवरण देने या उसे समझाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(i) संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं :- उत्तम, मध्यम और अन्य।
(ii) काल के तीन भेद माने गये हैं :-भूत,वर्त्तमान और भविष्यत्।

९. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

(A) कबीर वाणी के डिक्टेटर थे। - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

(B)“कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।" - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

(C) (कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।) - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

(D)कबीर, वाणी, के डिक्टेटर थे।" - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

9.उद्धरण चिह्न अवतरण चिह्न (“ ”)

जब किसी के कथन को या किसी पुस्तक के अंश को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करते हैं, तो प्रारम्भ में और अन्त में उद्धरण चिह्न लगाते हैं,

जैसे “कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।" - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

10. निम्न में से विराम चिन्ह कि द्रष्टि से कौन सा वाक्य सही हैं ?

A. पटेल - सरदार वल्लभ भाई भारत के 'लौह-पुरुष' कहे जाते थे।

B. पटेल (सरदार वल्लभ भाई) भारत के 'लौह-पुरुष' कहे जाते थे।

C. पटेल /सरदार वल्लभ भाई) भारत के 'लौह-पुरुष' कहे जाते थे।

D. (सरदार वल्लभ भाई) भारत के 'लौह-पुरुष' कहे जाते थे।

10.कोष्ठक चिह्न [ ], { }, ()

(1) किसी कथन, शब्द और वाक्यांश को अधिक स्पष्ट करने के लिए -

मेरी पुस्तक छपने वाली है (क्यों न हो शिक्षा का अधिकार ?)
पटेल (सरदार वल्लभ भाई) भारत के 'लौह-पुरुष' कहे जाते थे।

(2) अस्पष्ट और क्लिष्ट शब्दों को स्पष्ट करने के लिए -

इस वर्ष फ़सल को उसके शत्रुओं (कीड़े-मकोड़ों) से बचाने का पर्याप्त प्रबन्ध किया गया है।

(3) नाटक में पात्रों के अभिनय को अभिव्यक्त करने के लिए -

(दुःखी होकर) “अरे, तुम रो क्यों रही है?"
(लज्जित होकर)“अभी एक पत्र से पता चला है, मैं परीक्षा में उत्तीर्ण रही।

11.संक्षेप चिह्न (॰) –

कभी-कभी वाक्य में पूरा शब्द न लिखकर संक्षिप्त शब्द से काम लिया जाता है। ऐसी स्थिति में संक्षिप्त शब्द के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है,

(i) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थान पर केवल हि. सा. स.

(ii) संस्थाओं के नाम भी संक्षिप्त करके लिखे जाते हैं,
म.प्र. संगीत अकादमी, भोपाल
एन. सी. ई. आर. टी. दिल्ली

(iii) उपाधियाँ भी संक्षिप्त रूप में ही लिखी जाती हैं,
एम.बी.बी.एस. , बी. ए.; बी. एड.

(iv) हम प्राय: अपने हस्ताक्षर में भी केवल प्रथम अक्षर का ही प्रयोग करते हैं,
आर . के. गुप्ता
आर. आर . शर्मा

12 हंस पद चिह्न (^) -

लिखने जब कोई शब्द छूट जाता है तब उस स्थान पर इस चिह्न को लगाकर छूटे हुए अंश को लिख दिया जाता है,

आयु

(i) नाद सौन्दर्य से सविता की ^ बढ़ती है।

काव्य

(ii) व्यंजक वाक्य ही ^ माना जाता है।

चित्र रूप

(iii) कविता में कही हुई बात ^ में हमारे सामने आनी चाहिए।

13. लोप सूचक चिह्न (x x x) —

इसे अपूर्णता सूचक चिह्न भी कहते हैं। जब किसी कविता, लेख आदि का कुछ अंश देकर शेष को छोड़ दिया जाता है, तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है;

(i) 'मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में, किसी-न-किसी रूप में पायी जाती है।

x x x x x x x x जानवरों को इसकी जरूरत नहीं।' - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ii) रावरे रूप की रीति अनूप नयो-नयो लागत ज्यों-ज्यों निहारिए ।

x x x x x x x x x x x x x x - घनानंद

14.पुनरुक्ति सूचक चिह्न (” ”) –

एक ही वस्तु को बार-बार दोहराने से बचने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे

वस्तु का नाम	वजन (मात्रा)
चीनी	पाँच किलो
दाल	” ”
गेंहूँ	” ”
बाजरा	” ”

15. तारक चिह्न- (*)

तारक चिह्न का प्रयोग प्राय: फुटनोट अथवा पाद टिप्पणी देने के लिए किया जाता है।
उद्धृत अंश को ऊपर लिखा जाता है और उसके सन्दर्भ ग्रन्थ को नीचे फुटनोट में तारांकित करके लिखते हैं,

पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।*
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात।*

*रामचरितमानस, बालकाण्ड, तुलसीदास

*कामायनी, श्रद्धा सर्ग, जयशंकर प्रसाद

उपसर्ग-

उपसर्ग शब्दों के पहले जोड़े जाते हैं। इनसे शब्दों के अर्थ में प्राय: विशेष परिवर्तन जाता है।

परिभाषा

जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर अर्थ को बदल देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

भेद

उपसर्ग 3 प्रकार के होते हैं। वे नीचे दिये गये हैं :

1. तत्सम उपसर्ग
2. तद्भव उपसर्ग
3. विदेशज उपसर्ग |

(1)तत्सम उपसर्ग
हिन्दी में प्रयोग किये गये लगभग समस्त उपसर्गों का उद्गम संस्कृत से हुआ है। संस्कृत में 22 उपसर्गों की व्यवस्था है।

(2)तद्भव उपसर्ग (हिन्दी उपसर्ग)

हिन्दी में कुछ ऐसे उपसर्ग भी प्रयुक्त हो रहे हैं, जो संस्कृत में नहीं मिलते। ये हिन्दी की अपनी प्रवृत्ति के अनुसार विकसित उपसर्ग हैं, जो प्राय: तद्भव या देशज शब्दों से पूर्व जुड़ते हैं। डॉ. भोलानाथ के तिवारी ने इन्हें तद्भव उपसर्ग कहा है और इन्हें संस्कृत उपसर्गों से विकसित हुआ बताया है।

(3)विदेशज उपसर्ग
हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग 2 माध्यमों से आये हैं-(i) इस्लामिक प्रभाव के द्वारा (अरबी-फारसी द्वारा) (ii) अँगरेज़ी-प्रभाव के द्वारा (अँगरेज़ी भाषा-द्वारा) । तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (अर्थ और शब्द-रूप)

(1)तत्सम उपसर्ग-

अति -अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक,
अत्याचार, अत्युक्ति, अतिवृष्टि
अधि - अधिकरण अधिकार
अनु - अनुक्रम अनुचर
अप -अपकीर्ति अपभ्रंश
अभि -अभिमुख अभिलाष
अव -अवगत अवनति
आ -आकार आचरण
उत् -उत्कर्ष उत्तम उप उपकार उपहार
दुर -दुराचार दुर्गम

नि -निछेप निपात
निर -निराकार निर्दोष
निस -निस्संदेह निष्काषन
परा -पराजय पराक्रम
परि -परिवार परिहार
प्र प्रकाश प्रहार
प्रति-प्रतिकार प्रतिवादी
वि -विदेश विकास
सं -संकल्प संग्रह
सु -सुकर्म
स -सहित सरस
कु -कुकर्म कुरूप

तद्भव उपसर्ग-

अ, अन् - अचेत, अजान, अथाह, अबेर, अनमोल,
अध - अधकच्चा, अधपई, अधपका, अधसेरा, अधमरा, अधखिला
उन- उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
औ- औगुन। औसर
दुः -दुर्बल
नि -निखरा निडर
बिन -बिनदेखा बिनजाने
भर -भरपेट भरपूर

1. 'सम्' उपसर्ग से बना है?
(a) संयोग (c) स्वयंसेवक
(b) (b) सुकर्म (d) संतान

2.'अल' किस भाषा का उपसर्ग है?
(a) हिंदी. (c) फारसी
(b) उर्दू (d) अरबी

3. 'नादान' में ना उपसर्ग किस भाषा से आया है?
(a) हिंदी (b) उर्दू
(c) फारसी (d) संस्कृत

4. 'बदबू' में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है?
(a) ब (b) बद
(c) बे (d) बा

5. 'उनचास' में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) उ (b) उत
(c) उन (d) इनमें से कोई नहीं

6.निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है?
(a) अधिशासी (b) प्रशंसा
(c) विनाश (d) प्रत्याशा

7. 'क्रय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगाने से उसका अर्थ विपरीत हो जाएगा?

(a) 'अन्' (b) 'आ'
(c) 'प्र (d) 'वि '

8.'उज्ज्वल' में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) उज् (b) उ
(c) उप (d) उत्

9.'परिमाप' में उपसर्ग बताइए:

(a) परि (b) प

(c) प्र (d) परा

10. 'प्रख्यात' में उपसर्ग छाँटिए:

(a) पर (b) प्र

(c) परि (d) परा

(3)विदेशज उपसर्ग

हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग 2 माध्यमों से आये हैं-(i) इस्लामिक प्रभाव के द्वारा (अरबी-फारसी द्वारा) (ii) अँगरेज़ी-प्रभाव के द्वारा (अँगरेज़ी भाषा-द्वारा) । तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (अर्थ और शब्द-रूप)

अल -अलबेला अलबत्ता
कम -कमजोर
खुश खुशहाल
सर -सरपंच
दर -दरमियान दरकार

प्रत्यय

परिभाषा

ये शब्दों अथवा धातुओं के अन्त में लगाये जाते हैं। इनके प्रयोग से शब्द-भेद और उनके अर्थ में भी अन्तर हो जाता है।
इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप में नहीं होता।
प्रत्यय का निर्माण दो शब्दों से हुआ हैप्रति अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है।

इस प्रकार प्रत्यय का अर्थ हुआ-शब्दों के साथ,पर बाद में चलनेवाला (लगनेवाला)।

उदाहरण के लिए,

त्व- मनुष्यत्व मनुष्यत्व, बन्धुत्व बन्धुत्व
ता—निजता निजता, शिशुता शिशुता

प्रत्यय 2 प्रकार के होते हैं-
1. कृदन्त 2. तद्धित

1.कृदन्त प्रत्यय

कृत् प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होते हैं और उनके योग से बने शब्द 'कृदन्त' कहलाते हैं। उन्हें 'धातुज नाम' अथवा 'क्रियावाचक शब्द' भी कहते हैं।

गवैया, बनावट, ढकना, चलनसार, खेलक्कड़, पैरक, त्यागी, बचत आदि ऐसे ही शब्द हैं।

कृदन्त-भेद

कृत्प्रत्यान्त शब्द कई प्रकार के होते हैं। उनमें मुख्य छ: हैं-
(i) भाववाचक (ii) कर्तृवाचक (iii) कर्मवाचक (iv) करणवाचक (v) कृदन्तीय संज्ञाएँ (vi) कर्तृवाचक और क्रियाद्योतक कृदन्तीय विशेषण

(1)भाववाचक

आ, आई, आन, आप, आव, आस, ई, औसी, त, ती, न्ती, न, नी, र, वट, हट आदि प्रत्ययों के जोड़ने से भाववाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ बनती हैं।

उदाहरण के लिए,

आ- आटा, घेरा, छापा, गुज़ारा
आई- गढ़ाई, चराई, पढ़ाई, रुलाई, लिखाई, लड़ाई
आन- उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान, खदान
आप- मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप, संस्थान आव- उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव

(2)कर्तृवाचक-

अंकू- उड़ंकू, अड़ंकू, पढ़ाकू

अक-लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्पादक, साधक, दीपक,
वाचक अक्कड़-पियक्कड़, बुझक्कड़, भुलक्कड़, कुदक्कड़

आ-चढ़ा, रखा, कटा, भूँजा, फोड़ा, चला आक-पैराक, तैराक,
तड़ाक, उड़ाक

आकू-लड़ाकू, उड़ाकू, पढ़ाकू, कूदाकू, हलाकू

इयल-अड़ियल, सड़ियल, मरियल, बढ़ियल, दढ़ियल

इया-जड़िया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया

(3)कर्मवाचक -

ना-खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना, लेना, देना
नी-चटनी, सुँघनी, कहनी, छननी, ओढ़नी, घोटनी, पढ़नी, सुननी

(4)करणवाचक-

आ-झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई-रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ-झाडू, माडू, काढ़ू, साढ़ू न-झाड़ने, बेलेन, जामन
ना-बेलना, कसना, ओढ़ना, घोटना, रेतना, दलना

(5)विशेषणवाचक-

आवना - सुहावना, लुभावना, डरावना, हँसावना, रुलावना, उठावना, गिरावना
ना-उड़ना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना
नी-कहनी, सुननी, हँसनी, ओढ़नी, पहननी, जननी वाँ-ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ

(6)स्थानवाचक-

क-बैठक, फाटक
अधिकरणवाचक
ना-झिरना, रमना, पालना

विविध अर्थों में-

आनी-कमानी, लुभानी, मिलानी
औना-खिलौना, बिछौना, उढ़ौना
औनी-पहरौनी, ठहरौनी, मिचौनी, गवौनी, बुलौनी, मिलौनी
आवनी-छावनी, उठावनी, गिरावनी, बुलावनी, लुभावनी,
मिलावनी, डोलावनी
इन-कमाइन, गन्धाइन, लियाइन, दियाइन
का-छिलका, किलका, चिलका
की-फिरकी, फुटकी, डुबकी, लुटकी

2.तद्धित प्रत्यय

धातुओं को छोड़ शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं, उन्हें 'तद्धित' कहते हैं और जो प्रत्यय उन शब्दों में लगाये जाते हैं, वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए,

लूटना = लूट
जाँचना = जाँच
समझना = समझ
चमकना = चमक
मारना = मार
पहुँचना = पहुँच

(2)भाववाचक -

आ-जोड़ा, चूरा, सराफ़ा, बजाजा, बोझा
आइँद-कपड़ाइँद, सड़ाइँद, घिनाइँद, मघाइँद
आई-भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन- घमासान, ऊँचान, निचान, लम्बान, चौड़ान, उड़ान, बैठान
आयत-बहुतायत, पञ्चायत, तिहायत, अपनायत
आवट अमावट, महावट, गिरावट

(3) कर्तृवाचक-

इया-आढ़तिया, मखनिया, बखेड़िया, मुखिया, रसोइया
एड़ी-भँगोड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी
एली-हथेली, भेली, तबेली

(3)गुणवाचक-
आऊ-अगाऊ, धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल-खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला- अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाड़ला
(4)करणवाचक-
आ-झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा
(5)ऊनवाचक-
इया-खटिया, फुड़िया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई-पहाड़ी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की-कनकी, टिमकी टा- रोंगटा, कलूटा
टी-चोटी, बहूटी
ड़ा-चमड़ा, बछड़ा, दु:खड़ा, मुखड़ा, टुकड़ा, लँगड़ा
(6)स्थानवाचक-
आना-राजापुताना, हिन्दुआना, तिलंगाना, उड़ियाना
इया-मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया
ड़ी-अगाड़ी, पिछाड़ी

विविध अर्थों में-

आरी-दुधारी, दुवारी, बिलारी, किनारी इय-कमनीय, गमनीय, दमनीय
एरा-घनेरा, कमेरा, जनेरा एल-फुलेल, नकेल, अकेल
एला-अकेला, दुकेला, बघेला, मुरेला, अधेला, सौतेला, पेला, ठेला, मेला, रेला
नी-चाँदनी, पैजनी, नथनी
वान-भाग्यवान्, मूल्यवान्, गुणवान्
वाला-रखवाला, बलवाला, दिलवाला, रंगवाला, घरवाला, ग्वाला, गानेवाला
ल-घायल, पायल, छागल, पागल
हट-आहट, बुलाहट, चौधराहट, बौखलाहट

धन्यवाद...